भव्य-भारत

भारत-भूतल भव्य महान।
उत्तर में उत्तुंग हिमालय,
पूजनीय पावन प्रहरी है,
दक्षिण पद पखारती प्रतिपल,
सागर की सुललित लहरी है।
गले गंग की धार हार सी-
कल-कूजित गरिमा का गान,
भारत-भूतल भव्य महान।

पहनाती नित सूर्य रश्मियाँ,
नव किरणों का मुकुट ललाम,
उषा आरती सजा नित्य ही,
अभिनन्दन करती अभिराम,
क्षिति में अमिय ओस बरसा कर-
शशी करता नित जीवन दान,
भारत-भूतल भव्य महान।

आता जब मधुमास लगाती,
प्रकृति अमित पुष्पों का मेला,
गाता नभ में मुक्त विहंगम,
जब आती संध्या की वेला.

परम रम्य नैसर्गिक वीथियाँ,
काश्मीर सुषमा की खान,
भारत-भूतल भव्य महान।

जिसके उन्नत भाल पर में,
घिरते श्याम-रजत घन सुन्दर,
मोहक इन्द्र-चाप शत रंगा,
बनता जिसके क्षितिज छोर पर,
पावस में है धरा पहनती,
सुभग श्याम धानी परिधान,
भारत-भूतल भव्य महान।

राम-कृष्ण, गौतम की जननी,
शिव, प्रताप, विक्रम का धाम,
वीर सुभाष, भगत सिंह, झाँसी-
की रानी का देश ललाम,
तना हुआ सम्पूर्ण विश्व में,
जिसका उज्ज्वल कीर्ति-वितान,
भारत-भूतल भव्य महान।

गणेश 'चंचल'
ग्राम + पो०-सोहा, सोनवर्षा राज
जिला-सहरसा (बिहार)
पिन—852129
Mo.-- 9431418598